साहित्य की परिभाषा

साहित्य की परिभाषा के संबंध में कई मत प्रचलित हैं – जिसमें पाश्चात्य एवं भारतीय प्रमुख हैं।

कोई भी व्यक्ति अब कोई चीज/वस्तु की परिभाषा देता है तो इसका उद्देश्य मात्र यही होता है कि वह उसे कम से कम शब्दों में व्यक्त करके उसका स्पष्ट परिचय दे सके। लेकिन इस कार्य में पूर्ण एवं स्पष्ट होने के साथ–साथ व्यापक एवं मूर्त्त होना भी जरूरी है इसलिए परिभाषा देने के क्रम में इसे हमेशा याद रखना चाहिए। क्योंकि ऐसा नहीं करने से किसी भी वस्तु का सही–सही व्याख्या कर पाना मुश्किल होगा तथा सही–सही परिचय एक पहचान के रूप में नहीं आ पाएगी।

अगर हमारी वास्तविक स्थिति पर विचार किया जाए तो एक ऐसी वास्तविकता नजर आती है कि जिस वस्तु को हम वर्षों से अपने साथ देखते आ रहे हैं। उनके साथ हमारा एक ऐसा संबंध जुड़ गया है कि एक पल के लिए वह अलग हो जाए तो हम बेचैन हो जाते हैं। उसकी यदि हमें परिभाषा देने के लिए कहा जाए तो यह भी हमारे लिए कठिन है। हम इसकी ठीक–ठीक परिभाषा कैसे देना चाहिए। इस बात को कहने बतलाने वाले विद्वानों को हमें सत्–सत् नमन करना चाहिए।

साहित्य की परिभाषा देना सचमुच काफी कठिन है ठीक उसी प्रकार से जिस प्रकार पाँच भाईयों ने हाथी की परिभाषा कुछ इस प्रकार से दिया। बड़ा भाई ने हाथी का कान पकड़कर कहा उसका कान तो सूप जैसा है। पूँछ पकड़कर साँप जैसा। इस प्रकार यहाँ पर यह पाते हैं कि अनुमान लगाकर किसी वस्तु की सही परिभाषा या सही–सही पहचान नहीं बताया जा सकता है। किन्तु हम इसे सकारात्मक प्रयास कह सकते हैं। साहित्य की परिभाषा के संबंध में भी कुछ ऐसा ही है जो जैसा पाया महसूस

Scanned with CamScanner

किया। वह उसी प्रकार से परिभाषा दिया है और इस प्रकार से परिभाषा की पृष्ठभूमि तैयार हो पायी।

विद्वानों की परिभाषा को देखकर ऐसा लगता है कि साहित्य के लिए लेख एवं लेखक का होना अति आवश्यक है।

विद्याधर की परिभाषा अनुसार सर्वज्ञ और सब विषय के वर्णन करने वाले को कवि और उसकी रचना को काव्य (साहित्य) कहते हैं।

(1) भामह के अनुसार – "शब्दार्थौ सहितों काव्यम।"

(2) रूद्दत के अनुसार – "ननू शब्दार्थौ काव्यम रूद्रता।"

(3) कुन्तक के अनुसार – शब्दार्थौ सहितों वक्रवि सालिनी बच्चे व्यव स्थातो व्यापार काव्यम तद् विदाहलाद कारिणी।

(4) विश्वनाथ – "वाक्यम् रसात्मकम् काव्यम।"

(5) प० जगन्नाथ – "रमणीयर्थम प्रतिपादकम शब्दम्।"

(6) आनन्द वर्द्धन – शब्दार्थौ साहित्येन काव्यत्व।

पाश्चात्य और हिन्दी के विद्वानों के अनुसार परिभाषाएँ इस प्रकार हैं -

(1) कॉलरिज के अनुसार – "Poetry is the antithesis science, having for its immediate object pleasure not truth."
काव्य (साहित्यो विज्ञान का विलोम है जिसका निकटतम उद्देश्य आनन्द है, सत्य नहीं।

(2) हैजलिट के अनुसार – "Portry is the language of the imagination and passion." वासना और कल्पना की भाषा ही काव्य साहित्य है।

(3) शैली के अनुसार – "Poetry is a general expression of the imagination."
सामान्यतः कल्पना की अभिव्यक्ति को ही हम काव्य (साहित्य) कह सकते हैं।

(4) हडसन के अनुसार – Poetry in the inter through imagination and emotion.

भाव और कल्पना के माध्यम से जीवन की व्याख्या काव्य (साहित्य) है। हम कह सकते हैं कि कल्पना को यदि हम लोगों के मन मस्तिष्क के लिये एक बुद्धि वर्द्धक सहायक के रूप में आनन्द एवं सत्य का वाहक को काव्य (साहित्य) कहेंगे।

Scanned with CamScanner

हिन्दी के विद्वानों के अनुसार

काव्य (साहित्य) आत्मकी संकल्प करने योग्य अनुभूति है जिसका संबंध के बारे में यदि विचार करें तो यह विज्ञान से संबंध नहीं रखती है बल्कि यह तो एक श्रेयमयी प्रेय रचनात्मक ज्ञान–धारा है।

जयशंकर प्रसाद

(1) काव्य (साहित्य) जीवन का आलोचनात्मक व्याख्या है।

(2) काव्य (साहित्य) तो शब्दार्थों का विधान है। जिसमें शब्द एवं अर्थ की प्रमुखता होती है।

(3) काव्य (साहित्य) से ज्ञान–विज्ञान एवं मनोरंजन निष्पादन होना जरूरी है।

इस तरह परिभाषा पर विचार–विश्लेषण किया जाए तो कई और बिन्दू एवं तथ्य निकलेंगे।

Scanned with CamScanner